साभार: भवानी तिरुमूर्ति

समझदारी से चुनें विश्वविद्यालय

भवानी तिरुमूर्ति

सही पाठ्यक्रम, सुयोग्य प्रोफ़ेसरों, विविध विद्यार्थी समुदाय और छात्रवृत्ति के अवसरों के मुताबिक सही अमेरिकी विश्वविद्यालय चुनने के लिए समझदारी इसी में है कि समय रहते पड़ताल शुरू की जाए।

आखिर जब कोई विद्यार्थी अमेरिका में पढ़ाई करने के लिए अपना मनपसंद विश्वविद्यालय चुन लेता है, कागजी कार्यवाही और औपचारिकताएं पूरी करता है, अमेरिका के लिए सबसे सस्ता टिकट खरीदता है और अंततः हवाईजहाज में बैठ जाता है तो मन में खुशी का नहीं बल्कि बड़ी राहत का भाव जगता है कि चलो, सारी तकलीफ, उलझन और इंतज़ार का फल मिल गया है।

स्टारबक्स, बेन एंड जेरीज और टाको बेल। हां, वहां यह सब कुछ है। लेकिन, ये ऐसे कारण नहीं जिनकी वजह से कोई भारतीय विद्यार्थी अमेरिका पढ़ने जाए। ये तो अतिरिक्त फायदे हैं! वहां पढ़ने का असली कारण तो है शैक्षिक ज्ञान अर्जित करने का माहौल, अतुलनीय अनुशासन, कैंपस का शानदार जीवन, कुछ नया कर दिखाने और कुछ अलग तरह का सोचने के सुअवसर। और, मेरे मामले में एक और कारण है- पढ़ाई के साथ ही पूरी गंभीरता से कॉलेज टेनिस खेलना।

अधिकांश भारतीय विद्यार्थी सुनी-सुनाई बातों पर विश्वास करके अपनी खोज केवल गिनी-चुनी नामी संस्थाओं तक ही सीमित रखते हैं। इसलिए विद्यार्थियों को अपनी आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए अन्य विश्वविद्यालयों के फायदों का भी पता लगाना चाहिए।

जिन बातों पर विचार किया जाना चाहिए, वे हैं: पश्चिमी तट या पूर्वी तट, आकार: छोटे कॉलेजों में हर छात्र पर अधिक ध्यान दिया जाता है, निजी अथवा सरकारी- इसी के अनुसार धन की उपलब्धता तय कर सकेंगे, उदारवादी अथवा परंपरावादी- अमेरिका के परंपरावादी कॉलेज भारत के हिसाब से उदारवादी कहलाएंगे, अनुशासन और शिक्षक वर्ग-कई कॉलेजों में अध्ययन के विशिष्ट क्षेत्रों में बेहतर फैकल्टी होती है तथा अधिकांश प्रोफेसर पीएच.डी. होते हैं, और विद्यार्थियों की विविधता। खोजबीन, विश्लेषण और कॉलेज काउंसिलरों की राय लेना अच्छी बात है। आगे बढ़ने के लिए कक्षा 11 से ही सोचना शुरू कर दें।

अंतरराष्ट्रीय टेनिस फेडरेशन की जूनियर खिलाड़ी होने के नाते मैंने पढ़ाई के साथ-साथ टेनिस और आर्थिक सहायता के लिए छात्रवृत्ति का पता किया। मैंने पहले सीधे प्रशिक्षकों को पत्र लिखा और कई का जवाब मिला। मैंने तीन वर्ष अमेरिका में पढ़ाई की थी, अमेरिकी नेशनल जूनियर सर्किट में भी खेल चुकी थी और सैट परीक्षा में भी मेरा परिणाम अपेक्षाकृत ठीक रहा। इन सबने मेरी मदद की।

लेकिन, खेलकूद की छात्रवृत्तियां इतनी आसानी से नहीं मिलतीं क्योंकि प्रशिक्षक अमेरिकी खिलाड़ियों को जानते हैं और उनका पक्ष लेते हैं। अथवा, विदेशी छात्रों के मामले में वे अंतरराष्ट्रीय टेनिस फेडरेशन की रैंकिंग देखते हैं। यह स्वाभाविक ही है।

कोलेरैडो स्थित यूनिवर्सिटी ऑफ डेनवर के मापदंड मैंने पूरे कर लिए, और उससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि वहां प्रवेश लेने से काफी पहले उनके युवा और निपुण प्रशिक्षक से मेरी पहचान हो गई थी। उन्होंने भी मुझे खेलकूद की एक बढ़िया छात्रवृत्ति दे दी।

भारतीय विद्यार्थियों को कई चीजों में तालमेल बैठाना पड़ता है। उनके लिए सबसे अच्छा यह है कि ऐसे कॉलेज में प्रवेश लें, जिसमें छात्रों की विविधता हो क्योंकि अपनी तरह के माहौल में दूसरे भारतीय विद्यार्थियों को पाने से संबंध मज़बूत होते हैं। भारतीय विद्यार्थियों को विभिन्न मूल के विद्यार्थियों के साथ भी घुलना-मिलना चाहिए। बात यह है कि औसत अमेरिकी विद्यार्थी भारतीय विद्यार्थियों से मिलने को बहुत उत्सुक रहता है क्योंकि भारतीय विद्यार्थी बुद्धिमान और मेहनती माने जाते हैं।

कॉलेज का जीवन कई अर्थों में बहुत-कुछ सीखने का एक अच्छा अवसर देता है क्योंकि वहां मदद के लिए न रसोइए होते हैं, न काम वालियां और न ड्राइवर। अकेले जीवन से आपमें आत्मनिर्भरता आती है।

पढ़ाई के प्रथम वर्ष में कोई भी गंभीर रूप से बीमार पड़ सकता है (ना-ना, मैं आपको डराना नहीं चाहती), शुरुआती कुछ महीनों के बाद आपका वजन कम हो सकता है और आप समय का सदुपयोग करने के साथ-साथ अपने कपड़े धोने और एक कक्षा से दूसरी कक्षा में जाने की भागदौड़ के अभ्यस्त हो जाते हैं। इसके अलावा, खर्चे का सही हिसाब रखना भी बहुत जरूरी है, तभी आप समय पर माता-पिता से मदद मांग सकेंगे!

भारतीय विद्यार्थियों को अपनी जीवन शैली से थोड़ी शिकायत हो सकती है विशेष रूप से तब जब कोई विद्यार्थी धार्मिक विचारों वाला हो। लेकिन, जैसे धर्म को ओढ़ कर चलना जरूरी नहीं है, वैसे ही घुलने-मिलने के लिए अपने विश्वास अथवा मूल्यों के साथ किसी तरह का समझौता करने की भी आवश्यकता नहीं है। अमेरिकी जीवन प्रणाली कई बार अनजाने में ही किसी को अपने सांचे में ढालने लगती है हालांकि यह विविधता को भी बढ़ावा देती है। खैर, ज़िंदगी में यह होता रहता है मगर इसके मायने यह कतई नहीं है कि आप अपनी संस्कृति को भूल जाएं।

साभार: विकीपीडिया

कोलोरैडो में डेनवर विश्वविद्यालय।

***भवानी तिरुमूर्ति** चेन्नई से हैं और यूनिवर्सिटी ऑफ़ डेनेवर, कोलोरैडो में द्वितीय वर्ष की छात्रा हैं।*